महत्त्वपूर्ण खरतरगच्छीय ज्योतिष ग्रंथ

जोइसहीर

[पं० भगवानदास जैन]

इस नाम का ज्योतिष शास्त्र के मुहूर्त्त विषय का प्राचीन ग्रंथ है। इसका दूसरा नाम ज्योतिषसार भी है। यह दो प्रकार की रचना वाला देखने में आता है। एक तो दूहा और चौपाई छंदों में भाषामय है। इसकी प्राचीन हस्तलिखित दो प्रति साक्षररत्न श्रीअगरचन्दजी नाहटा बीकानेर वाले के शास्त्र संग्रह में मौजूद है। इन दोनों प्रति के पीछे का कुछ भाग बिना लिखा रह गया है, जिससे इसको रचना समय आदि समझने में कठिनता है, परन्तु इसकी रचना करने वाला खरतरच्छीय पं० हीरकलश मुनि ही है, ऐसा ग्रन्थ वांचने से मालूम हुआ कि छंदों में कई एक स्थान पर कर्त्ता ने अपना नाम जोड़ा है।

इस ग्रंथ की दूसरी रचना प्राकृत गाथाबद्ध है, इसकी एक प्रति जालोर (राजस्थान) में ज्ञानमुनि मण्डली लायब्रेरी में है, प्रति में मुख्य ग्रंथ के अलावा प्रत्येक पन्ने के चारों तरफ खाली जगह में टिप्पणियां लिखी हुई हैं, परन्तु ग्रंथ का अन्तिम भाग कुछ बिना लिखा रह गया है। इसकी दूसरी प्रति नाहटाजी ने कलकत्ता गुलाबकुमारी लायब्रेरी से लाकर मेरे पास भेजी थी यह पूर्ण लिखी हुई थी। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकार की प्रशस्ति होने से मालूम हुआ कि—'बृहत्खरतरगच्छीय जंगमयुगप्रधान भट्टारक जैनाचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजी के विजयराज्य में पंडित हीरकलश मुनि ने विक्रमसंवत् १६२७ के वर्ष में रचना की है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग १२०० गाथायें हैं। इनके दो अध्याय तरंगों के नाम से रखा है। प्रथम तरंग में ५९ विषय हैं। प्रथम मंगलाचरण यह है—

"पण परमिट्ठ णमेयं समरीय सुहगुरुं य सरस्सई सहियं।
कहियं जोइसहीरं गाथा छंदेण बंधेण ॥१॥"

मंगलाचरण में इष्ट देवों को नमस्कार करके ग्रन्थ का नाम 'जोइसहीर' (ज्योतिषहीर) स्पष्ट किया है। इसके बाद प्रथम तरंग में ५९ विषयों के नाम की पांच गाथाएँ हैं। विषय यह है—

"तिथि १, वार २, नक्षत्र ३, योग ४, होराचक्र ५, राशि ६, दिनशुद्धि ७, पुरुष नव वाहन ८, स्वरनाडी ९, वत्सचक्र १०, शिवचक्र ११, योगिनीचक्र १२, राहु १३, शुक्र १४, कीलक योग १५, परिधचक्र १६, पंचक १७, शूल १८, रविचार १९, स्थिरयोग २०, सर्वांकयोग २१, रवियोग २२, राजयोग २३, कुमारयोग २४, अमृत योग २५, ज्वालामुखी योग २६, शुभयोग २७, अशुभयोग २८, अर्द्धप्रहर २९, कालवेला ३०, कुलिकयोग ३१, उपकुलिकयोग ३२, कंटकयोग ३३, कर्कटयोग ३४, यमघंटयोग ३५, उत्पातयोग ३६, मृत्युयोग ३७, काणयोग ३८, सिद्धियोग ३९, खंजयोग ४०, यमलयोग ४१, संवर्त्तकयोग ४२, आडलयोग ४३, भस्मयोग ४४, उपग्रहयोग ४५, दंडयोग ४६, हालाहलयोग ४७, वज्रमूसलयोग ४८, यमदंष्ट्रायोग ४९, कुंभचक्र ५०, भद्रा (विष्टि) योग ५१, कालपाशयोग ५२, छींक विचार ५३, विजययोग ५४, गमनफल ५५, ताराबल ५६, ग्रहचक्र ५७, चन्द्रावस्था ५८ और करण ५९।"

इतने विषयवाले प्रथमतरङ्ग में ४१६ गाथायें हैं। इसके अन्त में ग्रन्थकार ने लिखा है कि—"इतिश्रीखरतर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छे पंडित हीरकलशकृते श्रीज्योतिषसारे प्रथमस्तरङ्गः ।"

इन विषयों में प्रसंगोपात कुछेक चमत्कारि प्रयोग दिये गये हैं, जो ज्योतिष नहीं जाननेवाले भी आसानी से अपना प्रत्येक दिन का शुभाशुभ फल जान सकते हैं ।

"दिनरिक्ख जम्मरिक्खं मेली तिहिवार अंक सव्वेहिं ।
सत्तेण भाग हरए सेसं अंकाइ फल भणियं ॥९३॥
लच्छी दुक्खं लाभं सोगं सुक्खं च जरा असणायं ।
सव्वेहिं जोइसायं भासिअं हीरंच निव्वायं ॥९४॥"

दिन का नक्षत्र, जन्म का नक्षत्र, तिथि और वार, इन सबके अंकों को इकट्ठा करके सात से भाग देना । जो शेष बचे उसका फल कहना । एक शेष बचे तो लक्ष्मी की प्राप्ति, शेष दो बचे तो दुःख, तीन बचे तो लाभ, चार बचे तो शोक, पांच बचे तो सुख, छह बचे तो वृद्धपना और सात शेष बचे तो भोजन प्राप्ति होवे । ऐसा सब ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है, इसका अवलोकन करके हीरमुनिने यहाँ कथन किया है ।

इत्यादि कईएक चमत्कारिक कथन इस ग्रन्थमें लिखे गये है ।

दूसरे तरंगमें ६३ विषय इस प्रकार हैं—

"नक्षत्रों की योनि, नाड़ी, वेध, वर्ण, गण, यूनीप्रीति, षडाष्टक, ग्रहमित्र, राशिमेल, वर्, लेना देनी, द्विद्वादश, तृतीय एकादश, दशम चतुर्थ, उभय समसप्तक, नवपंचम, ग्रामचक्र, गृहारंभ, चुल्हीचक्र, विद्यामुहूर्त्त, ग्रहण, शिशु अन्नप्राशन, क्षौरकर्म, कर्णवेध, वस्त्राभरण, भोजन, सीमंत, स्नान, नृपमन्त्री, शुभाशुभ, मास अधिकमास, पक्ष, तिथि की हानि वृद्धि, न्यूनाधिक नक्षत्रयोग, पांचवार का फल, नक्षत्रस्नान, गर्भयोग, पंथाचक्र, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र जातक शान्ति, रोहिणीचक्र, मृतकार्य, रात्रिदिनमान, राशलाका, रोगीनाडीवेध, सूर्यकालानक्षत्र, चन्द्रकालानल, मृत्युकालानल, चतुःनाडीचक्र, चउघडिया, विषकन्या, शील-परीक्षा, राशि आयचक्र, खंजचक्र, गतवस्तु ज्ञान, पंच तत्त्व, समयपरीक्षा, दिशाचक्र, संक्रान्ति विचार, चतुःमंडल, अकडमचक्र, लग्न और भावफल, सर्वपृच्छा, दीक्षा, वधुप्रवेश, गंडांतयोग, विवाह," इत्यादि विषय हैं ।

इन विषयों में पोरसी साढ पोरसी आदि पच्चक्खाण पारने का समय अपने जानुकी छाया से जानने का बतलाया है । गाथा ३३१ से गाथा ४६५ तक वर्ष का शुभाशुभफल लिखा है वर्ष कैसा होगा ? सुकाल पड़ेगा या दुष्काल, वर्षा कितनी और कब बरसेगी, धान्यादि वस्तु तेज होगी या मंदी इत्यादि जानने का अर्घकांड लिखा है । बाद में जन्म कुंडलियो का वर्णन है । विजय यंत्र आदि लिखने का प्रकार भी लिखा है । ग्रहों की शान्ति के लिये उपासना विधि बतलाई है, एवं चौबीस तीर्थंकरों की राशि तथा किसके लिये कौन तीर्थंकर लाभदायक है इत्यादि विषयों का वर्णन है ।

अन्तमें ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति लिखी है—

"गाहा छंद विरुद्धं अत्थ विरुद्धं च जं मए भणियं ।
तं गीयत्था सव्वं करिय पसाउव्व खमियव्वं ॥२७६॥
सिरिखरतरगण गुरुणो सूरिजिणचंदविजयराएहिं ।
हीरकलसेहिं गुंफिय जोइससारं हियगरत्थ ॥२७५॥
सोलसए सगवीसं वच्छर विक्कम्मविजयदसमीए ।
अहिपुरमज्झे आगम उद्धरियं जोइस होरं ॥२७८॥"

इति श्रीखरतरगच्छे पण्डितहीरकलशमुनिकृतिः श्रीज्योतिषसारे द्वितीयस्तरङ्गः सम्पूर्णः ।

ऐसा महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो जाय तो जनता को विशेष लाभ हो सकता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org